भारत में गो–पालनः एक आँकलन एवं भावी सम्भावनाऐं

डा0 रामस्वरूप सिंह चौहान
संयुक्त निदेशक, कैडराड
भारतीय पशु–चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर–243 122 (उ0प्र0)

भारत में पशुपालन अनादिकाल से एक मुख्य व्यवसाय के रूप में अपनाया जाता रहा है। भारत का विशाल गोवशं इस बात का द्योतक है कि देश का इसके प्रति भावनात्मक, धार्मिक तथा आर्थिक लगाव है। पशुपालन एक तेजी से उन्नत होता हुआ व्यवसाय है जो लगभग 8 प्रतिशत रोजगार उपलब्ध कराता है जिसमें मुख्य रूप से गरीब, सीमांत कृषक, महिलाऐं तथा युवा वर्ग शामिल हैं। विश्व जनसंख्या का 28 प्रतिशत पशु भारत में मिलता है जिसमें मुख्य रूप से 20 करोड़ गो वंशीय पशु है। आज भारत विश्व में सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश बन गया है। अधिकांश पशु छोटे–छोटे किसानों या भूमिहीन महदूरों द्वारा पाले जा रहे हैं। देश की ग्रामीण आबादी में से 73 प्रतिशत ग्रामीण घरों में पशु पाले जाते हैं। देश की कृषि अर्थव्यवस्था में 26 प्रतिशत से अधिक का योगदान पशुपालन से होता है। आठवीं पंचवर्षीय योजना में 5.7 प्रतिशत योजना व्यय कृषि एवं पशुपालन को दिया गया जिसका भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने 91 प्रतिशत कृषि तथा 9 प्रतिशत पशुपालन को दिया। सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान मात्र 3.4 प्रतिशत रहा जबकि पशुपालन से यह 9.2 प्रतिशत हुआ। आठवीं योजना में पशुपालन से लगभग दोगुनी वृद्धि दर प्रतिवर्ष देखी गयी, यह ऐसी परिस्थितियों में भी रहा जबकि खर्चों में कृषि के मुकाबले पशुपालन को काफी कम पैसा दिया गया। पशुपालन से सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) में 8.0 प्रतिशत का योगदान होता है।

हमारे देश में गो वंश की 26 नस्लें हैं जिनकी उपयोगिता दूध तथा भार ढोने के रूप में प्राचीन काल से ही सिद्ध हो चुकी है। मगर दुर्भाग्य यह रहा कि पिछले 40 वर्षो में संकरीकरण के अंधाधुंध प्रयोग से हम अपनी अच्छी नस्ल की गायों को ही खोते चले गये। संकरीकरण का मुख्य उद्देश्य था कि नॉन डिसक्रिप्ट गायें (जो गायें किसी प्रजाति में शामिल नहीं हैं) को विदेशी नस्ल के साँडों के वीर्य से ग्राभित कराकर उनका उच्चीकरण किया जाय तथा अपनी देशी प्रजातियों को चयन विधि द्वारा उनसे अधिक उत्पादन लिया जाय। मगर बिना किसी उचित नीति के सभी किस्म के गोवंश का संकरीकरण कर हम अपनी अच्छी प्रजातियों को खोने के कगार पर हैं। अब समझ आ रहा है कि संकरीकरण पूर्णतया फेल हो चुका है। संकर गाय में यदि विदेशी नस्ल का भाग 62.5 प्रतिशत तथा देशी का भाग 37.5 प्रतिशत रहता है तब तक तो उनका उत्पादन ठीक रहता है। मगर यह काफी लम्बे समय तक कई पीढ़ियों में कायम रखना कठिन ही नहीं वरन् असम्भव है। ऐसी कई रिपोर्ट हैं कि यदि संकर पशु में विदेशी नस्त का 75 प्रतिशत या इससे अधिक हिस्सा हो जाय तो उन जानवरों में मृत्युदर काफी बढ़ जाती है तथा ऐसे पशु हमारे यहाँ के वातावरण में जीवित नहीं रह पाते एवं उनमें कई प्रकार की समस्याऐं जैसे बांझपन, देर से बच्चा पैदा होना, नवजात पशुओं में मृत्युदर अधिक होना तथा दूध का उत्पादन कम होना आदि शुरू हो जाती हैं। भारतीय मूल की गाय की कई प्रजातियाँ विदेशों में अच्छा उत्पादन दे रही हैं। देश में कई परियोजनाएँ शुद्ध नस्लों को बनाये रखने व उनमें सुधार के लिए शुरू की गयी हैं, उनमें आशा जनक परिणाम आने की अपेक्षा है। खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ.ए.ओ.) के एक अनुमान के अनुसार हमें 2.5 प्रतिशत की दर से दूध का उत्पादन प्रतिवर्ष बढ़ाना होगा तथा उसे सतत् बनाये रखना होगा। जो भारतीय गोवंश के उचित विकास पर ही निर्भर करेगा।

अतः अब ऐसे उपायों की आवश्यकता है कि जिसमें भारतीय मूल के गोवंश के संवर्धन के लिए उचित कदम उठाये जायें। क्योंकि गोवशं के बिना हमारी जीवन पद्धति या कृषि व्यवसाय दोनों ही अधूरे रह जायेंगे। सन् 1929 में रायल कृषि कमीशन ने स्वीकार किया था कि "गाय व बैल अपनी सुदृढ पीठ पर हमारी अर्थव्यवस्था का सम्पूर्ण भार उठाये हुए हैं" बैलों से खेती करने पर खेत में मूत्र तथा गोबर भूमि की उर्वरता बढ़ाते हैं जबकि ट्रैक्टर आधारित खेती में प्रदूषण बढ़ता है क्योंकि धुँए में सीसे (लैड) की मात्रा मिट्टी को प्रदूषित करती है। आज यह स्थिति है कि हमारी कृषि में रासायनिक खादों व कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग के कारण इनके अवशेष प्रत्येक कृषि उत्पाद में मिलने लगे हैं। जो मानव जीवन के लिए एक गम्भीर खतरा है।

पाश्चात्य देशों में भी यह भूल स्वीकारी गयी है। वहाँ भी कीटनाशकों व रासायनिक खादों का प्रयोग कम करने व जैव आधारित उपाय अधिक प्रयोग करने पर जोर देने लगे हैं। क्योंकि उनके यहाँ इनके हानिकारक प्रभाव सामने आने लगे हैं। मगर उनकी व्यापारिक चालाकी के कारण वही कीटनाशक या रसायन हमारे देश में आयात कर प्रयोग किये जा रहे हैं। यदि गोवंश को बढ़ावा मिले और हम गोबर आधारित खाद का प्रयोग करें तो हमारी खेती भी खराब नहीं होगी व हमें पर्याप्त मात्रा में आमदनी भी होगी क्योंकि गोबर की खाद जमींन में 2–3 वर्ष तक अपना असर दिखाती है। इससे प्रदूषण नाम मात्र को भी नहीं होता है। भूमि की उर्वरा शक्ति के साथ–साथ

उसकी जलधारण क्षमता तथा बनावट भी सुधरती है। इससे ह्यूमस तथा सूक्ष्म तत्व भी मिलते हैं। यदि गोबर का प्रयोग बायोगैस के रूप में किया जाये तो ईंधन व गैस दोनों मिलते हैं।

गोवंशों से प्राप्त गोबर का प्रयोग 80–90 प्रतिशत जनता ईंधन के रूप में करती है। इसके कण्डे/उपले बनाकर उन्हें जलाने के रूप में प्रयोग किया जाता है। गोबर की राख का उपयोग कीटनाशक के रूप में किया जाता है। अतः गाय की उपयोगिता मानव समाज के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। इसीलिए हमारे हिन्दू समाज में इसे माता मानकर गाय की पूजा की है। महाभारत के अनु. 145 में कहा गया है कि

"लोकान् सिसृक्षणा पूर्व गावः सृष्टाः स्वयम्भुवा।
वृत्यर्थ सर्वभूतानां तस्मात् ता मातरः स्मृता।।"

अर्थात् गो–माता मातृशक्ति की साक्षात प्रतिमा है जिस दिन विश्व में गायें नहीं रहेंगी, उस दिन विश्व मातृशक्ति से विमुक्त हो जायेगा और उस दशा में कोई प्राणी नहीं बचेगा। सच तो यह है कि दिखने में भले ही उपरोक्त बातें अविश्वसनीय सी लगती हों मगर ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि ब्रिटेन में गायों को दूध उत्पादन के साथ–साथ माँस के लिए भी पाला गया। गोमांस क्रिश्चयन या मुस्लिम समुदाय खाते हैं। पिछले कुछ वर्षों में देखा गया कि ब्रिटेन के मनुष्यों में ऐसे रोग लगने शुरू हो गये जिनका सीधा सम्बन्ध गोमांस खाने से था। इन रोगों का कोई कारगर इलाज व बचाव भी नहीं था। अतः वहाँ के लोगों ने गोमांस खाना भी छोड़ा है। विदेशों में, विशेष रूप से अमेरिका में प्रयोगशाला में संश्लेषित तकनीक से बनाया हुआ "बोवाइन ग्रोथ हार्मोन" (बी.जी.एच.) प्रयोग किया जाता है। ताकि गायों से अधिक दूध उत्पादन लिया जा सके। यद्यपि इस हार्मोन से दूध का उत्पादन 20 प्रतिशत बढ़ जाता है। परन्तु यह हार्मोन मानव व गाय दोनों के लिए घातक हैं। इस हार्मोन के कारण मनुष्य में कैन्सर तथा अन्य रोग होने की संभावना बढ़ जाती है। ऐसा पता चला है कि इस हार्मोन को हमारे देश में भी प्रयोग किया जा रहा है जो बहुत ही घातक है। इसे बन्द किया जाना चाहिए। इसके अलावा हमारे यहाँ पशुओं से दूध निकालने के लिए ऑक्सीटॉसिन नामक हार्मोन का टीका पशुओं में धडल्ले से लगाया जा रहा है। इस हार्मोन के अंश दूध में भी आते हैं व ये मानव स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव यथा नपुंसकता, बच्चे न होना, प्रजनन अंगों के रोग आदि डालता है। अतः इसका प्रयोग रोकने की आवश्यकता है। दूसरे हमारे देश में संकरीकरण करके गायों से अधिक दूध उत्पादन लेने की कोशिश शुरू हुई। जिसके घातक परिणाम अब सामने आने लगे हैं।

हालाँकि यह देखा गया है कि भारतीय मूल की गायें कम दूध देती हैं। मगर हम यदि कुछ नस्लों को देखें तो पाते हैं यदि इनका समुचित वैज्ञानिक रीति से प्रजनीकरण किया जाय तो ये गायें संकर व विदेशी नस्ल की गायों से अधिक दूध दे सकती हैं। हमारे यहाँ की साहीवाल गाय को लेकर आस्ट्रलिया में "आट्रेलियन मिल्किंग जेबू" गाय का विकास किया है जो दूध उत्पादन में काफी अच्छी पायी गई है। इसी प्रकार ब्राजील में भारतीय मूल की गायों ने अच्छा उत्पादन किया है। फिर क्यों नहीं हमारे देश में अपनी नस्लों को सुधार कर उनका उत्पादन बढ़ाया जाता है? हमारे वैज्ञानिकों की सोच विदेशी वैज्ञानिक सोच पर आधारित होकर रह गयी है। क्योंकि उनमें अभी भी विदेशों में जाना व वहाँ काम करना अधिक भाता है या विदेशी पत्र–पत्रिकाओं में लेख छापकर अपनी योग्यता देश में व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सिद्ध करनी होती है। अतः उनका सारा ध्यान समुचित प्रोत्साहन के अभाव में इन्हीं सब में लगा रहता है। अपनी देशी गायें जैसे साहीवाल, गिर, देवनी या लाल सिन्धी गायों का विकास दूध उत्पादन के लिए किया जाय तथा भारवाही जानवर के उत्पादन के लिए नागौरी, अमृतमहल व खिलारी को सुधारा जाय। गाय की कुछ नस्लें ऐसी भी हैं जिनसे दोनों फायदे लिये जा सकते हैं उनमें हरियाणा, थारपारकर, राठी, कांकरेज शामिल है। ये नस्लें दूध व अच्छे बैलों के लिए प्रसिद्ध हैं तथा इनमें प्राकृतिक गर्भाधान के माध्यम से ही प्रजनन किया जाय क्योंकि कृत्रिम गर्भाधान के भी घातक परिणाम सामने आ रहे हैं। (देखें संलग्नक–1)

आधुनिकता की दौड़ व पाश्चात्य की चकाचौंध में हम अपनी प्राचीन संस्कृति को भूल बैठे हैं। भगवान कृष्ण गो–पालक के रूप में प्रसिद्धि पायें। गो सेवा का उदाहरण कृष्ण जीवन से अच्छा और कहाँ मिलेगा। उन्होंने ग्वाले के रूप में गो सेवा की व गो दूध, दही, मक्खन को मानव शक्ति के विकास के लिए प्रयोग किया। जब गायों की संख्या अधिक रहेगी तो उनका मूत्र/गोबर भी अधिक होगा जो भूमि को उपजाऊ बनायेगा। गौ की पूजा हम लोग करते आये हैं क्योंकि इसका मूत्र तक औषधि में प्रयोग होता है। गाय का प्रत्येक उत्पाद मानव के लिए एक उपयोगी वस्तु है। यहाँ तक कि मृत्यु के पश्चात् भी गाय की चमड़ी, हड्डी भी उपयोगी सिद्ध होती है। (देखें संलग्नक–2)

भारत के बदलते परिवेश में गौ पालन और अधिक महत्वपूर्ण बनता जा रहा है क्योंकि बढ़ती जनसंख्या के कारण जमीन का बँटवारा हो रहा है व यह छोटे–छोटे टुकड़ों में बँटी जा रही है। जिसमें ट्रैक्टर से कृषि कार्य करना असम्भव रहेगा। वहाँ पर बैल आधारित कृषि व्यवस्था ही अपनाना पड़ेगी। कम जमीन के रहते पशुपालन/गौ पालन ही मुख्य व्यवसाय रह जाता है जिससे खेतीहर मजदूर/छोटे किसान अपनी आय बढ़ा सकते हैं। कम उत्पादन वाली या जो गायें दूध की दृष्टि से अनुपयोगी हो गयी हों उन्हें गौ सेवा

सदन/गौशालाओं में रखा जा सकता है। जहाँ उनसे पंचगव्य आधारित आयुर्वेदिक दवाओं का उत्पादन किया जा सकता है। जिससे आय भी अधिक होगी, मानव स्वास्थ्य भी ठीक होगा व हमारी रसायन आधारित चिकित्सा प्रणाली पर निर्भरता भी कम हो जायेगी। वैसे भी एन्टीबायोटिक दवाओं का प्रभाव घटने लगा है तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार सन् 2020 तक ये दवाऐं अपना असर खो देंगी। ऐसे में आयुर्वेदिक आधारित दवाऐं ही रोगों के नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगी (देखें संलग्नक–3)। हमारे देश में 57 प्रतिशत भूमि पर खेती होती है बाकी जमीन बेकार पड़ी है जिसका उपयोग चारागाह के लिए किया जा सकता है।

गौ पालन के फायदे

1. गौ पालन से जहाँ व्यक्ति अपने परिवार के लिए पोषक खाद्य जुटा लेता है वहीं दूध व इससे बने पदार्थ जैसे दही, मक्खन तथा घी बेचकर आमदनी भी कर लेता है व जमीन के लिए खाद भी बन जाती है।

2. कीटनाशकों व रासायनिक खादों का प्रयोग कम होने से खाने पीने की चीजों में पर्यावरण प्रदूषण कम हो जायेगा।

3. गौ दुग्ध तथा गौ मूत्र कई बीमारियों में लाभदायक रहता है।

4. दूध सुपाच्य होता है व उसमें उपस्थित विटामिन व अन्य अवयव रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाते हैं।

5. गोबर विकिरण रोधी है। इसका उपयोग घरों के लेपन में प्रयोग होता है जहाँ इसका विकिरण प्रतिरोधी प्रभाव देखा गया है। यह जापान के हिरोशिमा व नागासाकी नगरों में भी सिद्ध हो चुकी है। भारत पर अणु बम का खतरा मडंरा रहा है, ऐसे में गोवंश से प्राप्त गोबर से दीवारें लेप कर विकिरण से बचने का एक सुगम, सस्ता व अच्छा उपाय और कोई नहीं हो सकता।

6. पशु पालन व कृषि एक दूसरे के पूरक हैं। कृषि उत्पाद पशुओं का भोज्य है तो गोबर कृषि उत्पादन बढ़ाने में काम आता है।

7. गौ पालन को बढ़ावा देने के लिए जहाँ स्वयं सेवी संस्थायें व आम जनता आगे आये व उचित कदम उठाये, वहीं जरूरी है कि सरकार की तरफ से भी इसे प्रोत्साहित किया जाय। सरकारों को प्रोत्साहन के लिए कुछ सुझाव दिये जा रहे हैंः

   (i) पशुचिकित्सा व पशुपालन विश्वविद्यालयों की प्रत्येक राज्य में स्थापना होनी चाहिए।

   (ii) भारतीय पशुचिकित्सा तथा पशुपालन अनुसंधान परिषद (इण्डियन कॉउन्सिल ऑफ वेटनरी रिसर्च) का गठन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की तर्ज पर हो जिसके निर्देशन में गोवंश आधारित अनुसंधान हो। ताकि पशुपालन अनुसंधान विशेष रूप से गो–अनुसंधान पर समुचित धन उपलब्ध हो सके व गो–अनुसंधान के विषयों के साथ न्याय हो सके।

   (iii) गौ उत्पादों की विपणन की समुचित व्यवस्था हो, इस दिशा में सहकारी समितियाँ महत्वपूर्ण योगदान कर सकती हैं।

   (iv) पशु चिकित्सकों/पशुपालक विशेषज्ञों को व्यवसायिक शिक्षित मानकर उन्हें नान प्रैक्टिस भत्ता अन्य चिकित्सकों की भाँति दिया जाना चाहिए।

   (v) प्रत्येक ब्लाक व जिला स्तर पर गौ सेवा सदनों/गौ शालाओं की स्थापना होनी चाहिए जिसमें स्थानीय पशु–चिकित्सक की नियुक्ति हो।

   (vi) खाली पड़ी भूमि को चारगाहों के रूप में विकसित एवं प्रयोग किया जाना चाहिए।

   (vii) पशु चिकित्सकों के लिए देशी जड़ी बूटियों पर आधारित चिकित्सा प्रणाली को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

   (viii) गौ सेवा पर खर्च किये गये धन को कर मुक्त किया जाना चाहिए।

   (ix) ग्रामीण महिलाओं को विशेष प्रोत्साहन के तहत गौ पालन के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए।

   (x) गौ वंश संवर्धन आधारित अन्य व्यवसाय जैसे डेरी उद्योग, दाना उद्योग, पनीर/खोया/मक्खन आदि के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

इस प्रकार यदि गौ संवर्धन व्यवसाय को प्रोत्साहन मिला तो देश की अर्थ व्यवस्था में एक अच्छा योगदान यह व्यवसाय कर सकेगा। जिससे हम विश्व में अपना गौरव पुनः प्राप्त कर सकेंगे।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

1. रामजीत शर्मा एवं रामप्रकाश चौधरी (1985)। डेरी पशु प्रजनन एवं प्रसूति विज्ञान. प्रकाशन निदेशालय, गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर।
2. ओ कोनोर, एम.एल. (1992)। रिप्रोडक्टिव मेनेजमैन्ट आफ द डेरी हीफर. नेशनल डेरी डेटा बेस '92।
3. कैटिल डाइवर्सिटी डेटाबेस, ऐसलिन इन्स्टीट्यूट, यु.के.।
4. जीन एच. डस्टर (1996)। ईस्ट्रस सिन्क्रोनाइजेशन फॉर बीफ कैटिल. नैब गाइड. फाइल जी 741.
5. रिस्को, सी.ए. (2000)। मैनेजमैन्ट एण्ड इकोनोमिक्स ऑफ नेचुरल सर्विस सायर ऑन डेरी ह्यर्ड्स। इनः टॉपिक्स इन बुल फर्टीलिटी (चैनोवेथ, पी.जे., सम्पादक). डब्लू डब्लू डब्लू.आई वी आई एस.आर्ग (यू.एस.ए.)।
6. सिंह, आर.ए.; सिंह, आर.पी. एवं खन्ना, ए.एस. (2001)। ससटेनेबिल एनीमल प्रोडक्शन. चौ.च.सि. हरि.कृ.वि., हिसार।
7. परोदा, आर.एस. (1998)। इण्डियन डेरी इन्डस्ट्री इन द इमर्जिग वर्ल्ड सीनेरियो। 29वीं डेरी इन्डस्ट्री कान्फ्रेस, करनाल।
8. मुदगल, वी.डी. एवं अरोरा, सी.एल. (1994)। वर्ल्ड एनीमल रिव्यू, **79**: 46–50.